P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL. -5, ISSUE-3, February-2017
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

पुस्तक समीक्षा

बणी–ठणी रा बालमा

प्रियंका रावल
व्याख्याता,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
विद्याभवन गो. से. शिक्षक महाविद्यालय,
उदयपुर

देश, काल और परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन प्रकृति का नियम है। उसी परिवर्तन का एक सुन्दर रूप हमारे समक्ष राजस्थानी भाषा के रूप में प्रकट हुआ। समय के साथ जैसे–जैसे राजस्थानी साहित्य अनेक विधाओं में प्रस्फुटित हुआ, वैसे श्रृंगार रसात्मक काव्यधारा को भी विस्तार मिला। साहित्य आज अनेक रूपों में उपलब्ध होता है, जिनमें प्रबंध काव्य, बातें (प्रेम–गांथाऐं), स्फूट छंद और लोकगीत प्रमुख है। काव्य के माध्यम से विभिन्न कवियों ने अपनी शैली और अनुभूती के अनुकूल प्रेम भावना को अत्यन्त हृदयग्राही रूप में व्यंजित किया है, परन्तु छंद की दृष्टि से इन सब में दोहे का प्रमुख स्थान है।

''कमती लिखणौ पण कीमती लिखणौ'' विशेषता को लेकर ''बणी–ठणी रा बालमा'' कविवर प्रो. देवकर्ण सिंह जी रूपाहेली द्वारा दोहा छंद में रचित रचना राजस्थानी के साहित्य को न केवल आसमां की बुंलदियों तक ले जा रही है, अपितु इसको विस्मृत और विलुप्त होने से भी बचा रही है। ''बणी–ठणी रा बालमा'' शीर्षक से पुस्तक के रूप में प्रेषित होने से पूर्व इसके अधिकांश दोहों का प्रकाशन 'मधुमती' एवं 'माणक' पत्रिकाओं में हो चुका है, तथा साथ ही रेडियो व टी.वी. पर भी दोहों का प्रसारण होता रहा है।

साहित्य की नींव हृदयगत भावों के बाज़ार में पड़ी है, जिस पर जीवन के समस्त रसों सुख–दुःख, घृणा–क्रोध, भय, उत्साह, उमंग, विरह आदि ने ईंट, गिट्टी, रेत, सीमेंट का काम करके काव्यरूपी आलिशान महल का निर्माण कर दिया। ''बणी–ठणी रा बालमा'' रचना वर्षा ऋतु में प्रियतम से विरह को शब्दों में बांध कर प्रकट कर रही है, जिसमें प्रेमिका एवं पत्नी को कई आशंकाएँ भी सता रही है क्योंकि व्यापार हेतु जाने वालों के अतिरिक्त उस समय में युद्ध के निमित्त भी बड़ी फौजें लेकर इस शौर्यधरा (राजस्थान) के सूरमा सुदूर प्रदेशों में जाया करते थे, जिनके लौटने की अनिश्चित अवधि ही दुःखद चिन्तापरक नहीं होती थी, अपितु अनेकानेक प्रकार की आशंकाएँ भी उनकी कल्पना में रह–रह कर कौंध जाती थी। पति का परस्त्री के प्रेमपाश में आबद्ध होकर अपनी पत्नी को बिसरा देना अथवा युद्ध के जोखिम से पति के प्राणों तक की चिंता पत्नी को भाव विह्वल कर देती थी और उसका सुलभ कोमल हृदय अनेक प्रकार की कल्पनाओं की उधेड़बुन में विह्वल हो जाता था आदि परिस्थिति अनुसार भावों का उद्वेलन है।

साहित्य प्रेमियों के लिए यह रचना उनके राजस्थानी भाषा नवीन विचारों एवं शब्दों के भण्डार हेतु ही उपयुक्त नहीं है अपितु उनको यह रचना वाचन के माध्यम से उस समय में विचरण हेतु कल्पना जगत के मार्ग से ले जाते हुए पाठक को वर्षा ऋतु में विरह की वेदना का अनुभव एवं प्रेम की क्रिड़ाओं का आनन्द भी करवाएगी।

त्याग और बलिदान से ओतप्रोत राजस्थान का इतिहास जितना उज्ज्वल है उतना ही उज्ज्वल, समृद्ध और ओजस्वी यहाँ का साहित्य है। प्राचीन डिंगल गीत, महाकवि सूर्यमल्ल का ''वंश भास्कर'' और 'वीर सतसई', राठौड़ पृथ्वीराज की 'वेलि कृष्ण रूक्मणि री', ईसरदास की 'कुण्डलियां', 'ढोला मारू रा दूहा' मीरां बाई के पद, सन्तों की वाणियां तथा लोगों के कण्ठों में सुरक्षित विशाल लोक साहित्य किसी भी प्राचीन भाषा के उच्चस्तरीय साहित्य के समकक्ष रखा जा सकता है।

राजस्थान व राजस्थानी वाङ्मय की ऐसी सबल समृद्ध परम्परा के आलोक में 'बणी–ठणी रा बालमा' के एक सौ एक दोहों की मणिमाल कवि देवकर्ण सिंहजी की सारस्वत साधना का सारभूत सुफल है। विवेच्य कृति में राजस्थान की विरहणियाँ अपने प्रवासी पति का अपने गाँव–नगर (दोहा सं.1–48)

राजस्थान के एकीकरण से पूर्व की रियासतों एवं ठिकानों का नामोल्लेख है, गढ़–दुर्ग (दोहा सं.49–54) राजस्थान के प्रमुख दुर्गों का वर्णन किया गया है, देव–तीर्थ (दोहा सं. 55–62) समस्त तीर्थ स्थलों का वर्णन है, नदी–नाले (दोहा सं.63–86), झील–सरोवर (दोहा सं. 87–101) की मनमोहक छवियों का भावात्मक स्मरण करवा कर अपने प्रियतम से तत्काल घर लौटने की गुहार करती है। रचना में वर्णित वर्षा ऋतु विरह से पीड़ित प्रमिकाओं को विरहाग्नि में जला रही है। प्रेमिका अपने प्रेमी से मिलकर अपनी इसतन–मन की अगन को शान्त करना चाह रही है, लेकिन ऐसा हो नहीं पा रहा है। वर्षा ऋतु जाकर दूसरी बार पुनः आ जाने तक प्रियतम का कोई संदेशा तक नहीं आने का वर्णन किया गया है। इसी संदर्भ में एक प्राचीन दोहा दृष्टव्य है–

सोनो लेवण पिउ गया, सूनौ करनै देस।
सोनो मिल्यौ न पिउ फिर्‌या, रूपा व्हैग्या केस।

(अर्थात् मेरे प्रियतम सोना कमाने परदेस क्या गए, घर–परिवार ही सूना कर गए। जितना समय हो गया, वह लौट कर नहीं आए। लगता है वह अभी तक सोना हासिल नहीं कर पाए है और इधर बाट जोहते–जोहते मेरे बाल चांदीवत श्वेत हो गए है।)

''बणी–ठणी रा बालमा'' रचना के समस्त दोहों का शब्दार्थ तथा भावार्थ रचयिता द्वारा पुस्तक में दिया गया है तथा साथ ही इनमें प्रयुक्त अलंकारों का उल्लेख भी किया है। प्रत्येक दोहें पर टिप्पणी भी प्रस्तुत की गई है तथा साथ ही दोहे का अंग्रेजी अनुवाद भी प्रस्तुत किया गया है। जो विभिन्न भाषाओं के पाठकों हेतु जैसे हिन्दी और अंग्रेजी के लिए सहज भाव से दोहों के रसास्वादन में सहायक रहेगी।

दोहा सं. 6 में किशनगढ़ चित्रशैली की किवंदन्ती ''बनी–ठनी'' नायिका का स्वरूप चित्रकला जगत का नायाब नमूना है।

दोहों के पश्चात 10 परिशिष्ठ दिए है, जिनमें क्रमशः राजस्थानी नायक–नायिका संबोधन, राजस्थान के विशिष्ट आवास–निवास के सांस्कृतिक संबोधन, राजस्थानी महिलाओं के परिधान, राजस्थानी महिलाओं के आभूषण, राजस्थानी गीत–प्रगीत, नायिका–भेद राजस्थानी प्रेम आख्यानों में नायक–नायिकाएँ, खास–खास पर्व–त्यौहारों की तिथियां, राजस्थानी पृष्ठभूमी में विवाह–मांडे की शब्दावली, राजस्थानी में दोहें के रूप में है तथा अन्त में पदानुक्रमणिका दी गई है।

''बणी–ठणी रा बालमा'' कृति राजस्थानी साहित्य में एक पूर्णिमा का चाँद है, लेकिन चाँद में भी दाग होता है, ठीक उसी प्रकार इस कृति में भी कुछ कमियाँ दृष्टिगत हुई है, जैसे लेखन (व्याकरणिक) सम्बन्धित (.) नुक्ता सही स्थान पर नहीं लगाया (क.) – x, (क़) √, (ग.) – x, (ग़) √ आदि।

सबसे पहले पाठक की नज़र पुस्तक के आवरण पर पड़ती है। आवरण के चित्र, डिज़ाइन, रंग आदि द्वारा पाठक को पुस्तक के स्तर, विषय और उसकी पाठ्यसामग्री के बारे में कुछ अनुमान हो जाता है। पुस्तक के आवरण पृष्ठ से आकर्षित होकर ही पाठक उसे उठाने और खोलने के लिए प्रेरित होता है। ''बणी–ठणी रा बालमा' कृति एक राजस्थानी कृति है इस कृति का आवरण पृष्ठ यदि नीले रंग की बजाय केसरिये रंग का होता तो यह राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति का एक सुन्दर मेल हो जाता। आवरण पृष्ठ पर अंकित चित्र भी कृति के शीर्षक के अनुसार प्रतीत नहीं हो रहे है पर हाँ कृति का आवरण पृष्ठ सख्त और मजबूत होने की वजह से पाठक को अपनी ओर जरूर आकर्षित करता है जो कि आवरण पृष्ठ की एक मुख्य विशेषता है।

चित्र पुस्तक को अधिक आकर्षक और रोचक बनाते हैं। चित्रों के कारण प्रत्येक व्यक्ति पुस्तक की ओर खिंचा चला जाता है। पुस्तक हाथ में आते ही व्यक्ति सबसे पहले उसके चित्र ही देखता है। परन्तु केवल आकर्षण में वृद्धि ही चित्रों की एक मात्र उपयोगिता नहीं है, चित्र किसी पुस्तक की प्रकृति के बारे में पाठक को अपनी राय बनाने में मदद करते हैं। ''बणी–ठणी रा बालमा'' कृति में दोहों के पश्चात् बहुत खाली स्थान बचा हुआ है, इस खाली स्थान की पूर्ति यदि दोहों से सम्बन्धित चित्रों से की जाती तो यह सोने पर सुहागा होता।

सारांश में हम कह सकते हैं कि यह रचना राजस्थानी भाषा एवं साहित्य के प्रेमियों की पराकाष्ठा पर खरी उतरती है।